International Journal of Applied Research 2022; 8(3): 201-203

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(3): 201-203
www.allresearchjournal.com
Received: 13-01-2022
Accepted: 17-02-2022

डॉ० ममता कुमारी
पता–ग्राम+पोस्ट+थाना–मधेपुर, जिला–मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० ममता कुमारी
पता–ग्राम+पोस्ट+थाना–मधेपुर, जिला–मधुबनी, बिहार, भारत

मैथिली साहित्य आ गंगेष गुजन

डॉ० ममता कुमारी

प्रस्तावनाः

मैथिली साहित्य मे गंगेष गुंजन सातम दषकक प्रारम्भमें कथाकारक रूप मे प्रख्यात भेलनि। मैथिली साहित्यमें प्रवेष कयलनि आ बड़ कम समय में, अपन प्रतिभाक बलें, एहिमें चर्चित, स्थापित भऽ गेलाह – कथाकार रुपमें तँ सहजहि कविक रुपमे, उपन्यास कारक रुपमे, एकांकीकार रुपमे सेहो।

हिनक किछु समालोचानात्मक निबन्धो प्रकाषित अछि, जाहिमे साहित्यिक प्रसंग हिनक मौलिक विचार अभिव्यक्त भेल अछि। हिन्दी–जगतमे सेहो ई अपन स्थान बना लेले छथि, कवि कथाकारक रुपमे ओह भाषामे चीन्हल–जानल जाईत छथि। साहित्यकारक अतिरिक्त ई संगीतज्ञ आ चित्रकारी छथि।

गंगेष गुंजन क पैतृक–वासस्थान मधुबनी जिलान्तर्गत पिखलबाड़ थिकनि। हिनक जन्म 15 जुलाई 1942 कँ भेल छनि मूले नाम थिकनि– गंगेष्वर झा। हिन्दी आ मैथिली मे ई0 एम0 ए0 कयने छथि। आकाषवाणीक सेवा मे अध्ययनेक समयसे संलग्न छथि। सम्प्रति हिन्दीक प्रोड्युसर पदपर कार्यरत छथि। हिनकर स्थान उच्च कोटिक अछि। पटना विष्वविद्यालय द्वारा मैथिली रेडियो–रुपकसे सम्बद्ध शोध–प्रबन्ध पर हिनकर पी0 एच0 डी0 क उपाधि प्राप्त भेल छनि। जाहिमे हिनकर अलग स्थान अछि। जाहिमे गंगेष गंजन अपन गुणवत्ता कऽ बखान कँ चर्चा अलग देखौने अछि।[1]

हिनकर पुस्तक विभिन्न विधामे प्रकाषित अछि। अन्हार–इजोत (कथा संग्रह) हम : एक टा मिथ्या परिचय (दीर्घ कविता), लोक सुन (कविता–संग्रह), पहिल लोक, (उपन्यास), बुधिबधिया (चौबटिया नाटक) आइ भोर वाटक मिथिला मिहिरमे छपल अछि। हिनक कथा वस्तु ओ षिल्प दुनु स्तरपर क्रमषः सूक्ष्म होइत गेल अछि। जाहिमे हिनकर अपना कथा वस्तु ओ षिल्प पर अलग स्थान बनौने छथि। एम्हरका हिनक कथासभक मानव–मनक ततेक सूक्ष्म तन्तुकँ छबैत अछि जे ओ सामान्य पाठकंक पकड़सँ बाहर भऽ जाइछ।

तहिना बहुतो पाठक हिनक कथाक षिल्पमे तेना ने ओझरा जाइत अछि जे मुल विषय ओकरा छूटि जाइत छैक। तँ ई कहब जे हिनक कथाकँ बुझवा लेल एक विषेष मानसिकता चाही, कोनो अत्युक्ति नहि होयल। जे हिनकर मानसिकता मे ओझरा जाइत अछि। जाहिमे हिनक स्यान महत्वपूर्ण अछि। हिनक एम्हरूका कथा ततेक बौद्धिक भऽ गेल अछि जकर सम्यक रसास्वादनक एक विषेष वर्गक पाठक कऽ सकैछ। किन्तु एकर तात्पर्य ई नहि थिक जे हिनक कथामे कथात्मक अभाव रहैछ, ओ कथा नहि भऽ कऽ दार्षनिक व्याख्यात भऽ जाइछ। एकर विपरीत, आहिमे कथा तत्व पर्याप्त रहैछ तथा नव्यतम षिल्प–शैलीक रसिक साकांक्ष पाठककँ नीक मानसिक खोराक जुटबैछ।

मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाषित कथा संग्रहमे हिनक कथाक विष्लेषण करैत उचिते कहल गेल अछि ''सातम दषकमे समस्त भारतीय साहित्यमे जे कुँठा, अजनवीपन, निरर्थकबोध आदिक लहरि आयल, तकर मैथिलीमे ई सफल प्रयोक्ता भेलाह। व्यक्तिक अन्तरतमक कोमल तत्तक ई कथाकार थिकाह। सामाजिक विसंगतिक कारको आन्तरिक स्तरपर उत्पन्न खौझ आ तकरा बाट नहि भेटबाक औझरौरक काटौं जन्म लेत दिषाहीनताक सूक्ष्म अभिव्यक्ति हिनक कथा दैत अछि। मुदा कतहु–कतहु हिनक कथामे सम्प्रेषणक समस्या अनुभूतिक स्फीत चित्रणमे बाधक सिद्ध होइत अछि।[2]

गंगेष गुंजन जखन एम0 ए0 मे छलाह। तखन हिन्दी औ मैथिली मे एवं शोध 'रेडियो रुपक' पर कएल। सम्प्रति आकाषवाणी पटना मे 'प्रोड्यूसर' पद पर प्रतिष्ठित। आकाषवाणी पटना केन्द्र मे भारती कार्यक्रम सँ सेहो सम्बद्ध रहि चुकल छथि। मैथिलीक प्रचार–प्रसार मे हिनक भारती कार्यक्रमक विषेष योगदान रहल।

मैथिली साहित्यक क्षेत्र मे ई कथाकार, नाटककार, कवि उपन्यासकार ओ गीतकारक रुप मे प्रसिद्ध छथि। हिनक अन्हार इजोत (कथा संग्रह), हम एकटा मिथ्या परिचय एवं लोक सुनू (कविता संग्रह), आइ भोर (नाटक) आदि पोंथी प्रकाषित अछि।

'पहिल लोक' उपन्यास मिथिलामिहिर मे धरावाहिक रूपें प्रकाषित भऽ चुकल छन्हि। भाषा पर हिनका नीक अधिकार अछि। मनोवैज्ञानिक परीक्षणक सूक्ष्म दृष्टि ओ अभिनव चिंतन हिनक वैषिष्ट्य थीक।

मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी मे सेहो चर्चित छथि। हिनका द्वारा रचित निम्न पद पर अत्यन्त लोकप्रिय भेल अछि जकरा विभिन्न मंच सँ सस्वर ई गाबि चुकल छथि।

हमरा नहि सोर कठ हमर बाट काटल अछि।
गायक सिमान जेकाँ हमर मोन बाँटल अछि।।

'लोक सुत 'क' सम्बोधन पृष्ठभूमि मे अपन रचनाक सम्बन्ध मे डॉ. गुंजन कहैत छथि– ''ई रचना सभ यहि किछुओ कतहु–अनपेक चेतना कैं स्पर्ष कऽ गेल होअय, अनुभव मे किछु जोड़ि सकल होअय आ रचनात्मक स्तर पर उत्तेजित कऽ सकल होअए तँ ई कविता, अत्यता अपने एहि रचना सब कैं किछुओ मानवा लेल स्वतन्त्र छी। कविता कविक सभ किछु बानि दिअय से कोनहु रचनाकार आकांक्षा करैत अछि। हमरो अछि।''

डॉ0 'श्रीरा' क कथन अछि–''बालपुरूष' द्वारा सम्पादित 'अनामा' मे श्री गंगेष गुंजन' हमर एक मिथ्या परिचय' शीर्षक दीर्घ कविता प्रकाषित भेल ताहि मध्य गुंजन जी व्यक्ति मे आच्छन्न संत्राम, विक्षोभ ओ वास्तविकता के अतियर्थाथवादी रीतिएँ चित्रित करैत नवीन काव्य–क्षेत्र मे एक नूतन मानदण्ड प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल। हिनक रचना मे निराषा ओ अवसादक बढत चित्रण भेल अछि। 1680 ई0 मे प्रकाषित हिनक 'लोक सुनू' मे चिन्तनक स्वर अपेक्षाकृत अधिक व्यवस्थित रूपैं अभिव्यंजित भेल अछि।''[3]

गंगेष गुंजन मैथिली साहित्यमे हिनकर स्थान अग्रगण्य अछि। किन्तु हिनक 'अन्हार–अजोत' क कथासभ बड़ साफ अछि, सभ स्तरक पाठकक मनोनुकूल अछि तथा एम्हरुका हिनक कथामे कथ्य आ षिल्पगत जे अस्पष्टताक आरोप लगाओल गेल अछि। ताहिसँ सर्वथा मुक्त अछि। अभिनय, अन्हार–इजोत, चन्द्रमा : एक टा टुटल चुड़ी, सूर्यक निर्माण, एक टा गुलाब डारिपर तथा बन्हिजइ छौ टा कथाक उक्त संग्रमे संकलित अछि।

एकर भूमिकामे आधुनिक कथाक मूल तत्वकैं एक ठाम समटैत सुधाषु 'षेखर' चौधरी लिखने छथि– ''आधुनिक मैथिली कथा सूक्ष्मसँ सूक्ष्म स्थितिक परिवेषमे, क्षणिकसँ क्षणिक मानसिक उहापोहमे, क्षुद्रसँ, क्षुद्र अनुभूतिक आवेगमे मांसल स्वरूप ग्रहण करबाक क्षमता रखैत अछि। आधुनिक मैथिली कथाकारक यहै सफलता छनि यैह विषेषता छनि, यैह मौलिकता छनि। आधुनिक मैथिली कथा विकासक एहि पृष्ठभूमिकैं दृष्टिमे राखि यदि गंगेष गुंजन कथापर विचार कयल जाय तँ ई स्वीकार करऽ पड़त जे हिनक कथासभमे ओ सभ तत्व विद्यमान छनि जकरा लऽ कऽ आनक कथा 'आधुनिक कथा' कहवैत अछि।

हिनकर उल्लिखित कथाक अतिरिक्त सूप महँक भाँटा, देह मित्र, ढाही करुआरि आदि हिनक किछु प्रसिद्ध कथा अछि। 'करुआरि मे वर्त्तमान जीवनक विसंगति आ मानसिक छद्यकैं उद्यारितकऽ राखल गेल अछि। नकली प्रतिष्ठा आ फुसि, भावुकता बीच एक टा जीवन्त क्षणकैं कथा पड़बाक चेष्टा करैछ। हिनक देह कथामे दाम्पत्य जीवनक एकान्तमे क्षणमे मनुष्य कतेक कंहित एवं आर्थिक रूपैं अषक्त विवष रहैछ तकर अत्यन्त मार्मिक आ स्वाभाविक चित्रण भेटैत अछि।

मैथिलीमे हिनक कथाक विषिष्ट अवदानकैं स्वीकार करैत डॉ0 जयकान्त मिश्र हिनका प्रभास कुमार चौधरी संग आधुनिक मैथिली कथाक महान स्तम्भ मानलनि अछि।

गंगेष गुंजन ई मुक्तकाक कविताक रचना प्रर्याप्त कयने छथि गीत आ गजल सेहो कम नहि। लिखने छथि। हिनक मुक्तक कविता गुढ़ अर्थ लेने रहैछ, तैं कतहुँ कतहुँ अस्पष्टताक दोष सेहो ओहिमे चल अवैछ, किन्तु गीत हिनक बड़ कोमल, बड़ स्पष्ट ओ बड़ हृदयग्राहीं होइछ। किन्मु हिनक किछु एहनो कविता अवष्य अछि, जाहिमे शैलीक नव्यता रहितो कथ्य सहज–सरल भऽ कऽ आयल अछि।

'लोक सुनू' मे हिनक 29 गोट आधुनिक कविता संग्रहित अछि, जे हिनक कवि व्यक्तित्वकैं उपर्युक्त गुणकैं उद्घाटित करैछ। उदाहरण रूपमे हिनक 'कविता–मनकथा' क निम्नलिखित पातीकैं राखल जा सकैछ–

सड़कपर जाइत काल पाछसँ।
हमर अन्वेषी आँखि चीन्हि
गेल–ए ओकरा,
हम कहैत छिऐक–दही हाक
हम हाक नहि दऽ पवैत छिऐक–
ओकर यात्रामे बिहन होयतेक।
ई–केहन अपनत्व जागल–ए हमरामे
आन हमर ओकर यात्रा फराक फराक
सफल–विफल होबऽ लागल–ए।।[4]

गंगेष गुंजन क हम एकरा मिथ्या परिचय (1968) नव षिल्पमे कविक पहिल दीर्घ कविता थिक। गंगेष गुंजन एक कवि थिकाह जे सामाजिक संघर्ष ओ अन्तविरोध तथा अमानवीय प्रवृतिक उहापोह करैत छथि। विभिन्न विषयपर विषयपर हुनक दष चयनित कविता मैथिलीक नवकविता मे समाविष्ट अछि। परिवर्तनषील समाजमे अपन पहिचान बनयबाक लेल गंगेष गुंजन बौद्धिक ताकहरेक कवि थिकाह।

हुनक शैली विचारोत्तेजक, तर्कसंगत ओ यदा–कदा दरुहतास बोझिल अछि। लोक सुनू (1980) आधुनिक मनोदषाक बीस कविताक एक संकलन थिक। जे नव युगक मानव–स्वरूपक विष्लेषण गहन अन्त दृष्टिक संग करैत अछि। कविक शैली नवपरिर्वतनकारी अछि जे आम आमदीक पहुँचसँ किछु उपरक वस्तु थिक। विषयरक व्यक्तित्वहीन प्रवृत्ति, हुनक प्रयोगषील कविताक निवेदनके सीमित कऽ दैत अछि। हुनक रचना सम्मानित अछि अपन प्रत्युत्पन्नमातित्व लेल जँ नव शैलीक लेखनक अनुरूप उच्च कोटिक मानवीय गरिमा प्रक्षेपित करैत अछि। गुंजन मानवतावादी छथि जे लोककैं संदेष दैत छथि। जे ओ लोकनि क्षुद्र विचारसँ ऊपर उठथि आ नव समाजक परिकल्पना दिया मुड़थि।

बुधिबधिया (1982) गंगेष गुंजनक एक भव्य नवकर नाटक थिक। व्यस्त चौक–चौराहापर प्रदर्षनीय बुधिबधिया मैथिली नाटकक विकासमे एक मीलक पाथर थिक। पाखण्ड ओ प्रपंच पर ई तीक्ष्ण व्यग्ंय कसैत अछि। नव विचारसँ उद्भासित नाटककार सामाजिक–राजनीतिक जागृतिक आहान करैत छथि। तात्कालिक आयोजनक रुपमे नाटक क्रान्तिकारी परिवर्तनक विषय–वस्तुके अंगीकृत करैत अछि। नाटकक उद्देष्य वाणीरहित जनमानसक शोषण आ राजनेताक आडम्बर वा छलावासँ मुक्त राखब थिक। नाटककार बहुत कलात्मक रंगसँ समकालिक स्थानीय समस्या सबपर प्रकाष–किरण प्रक्षेपित करैत सब विषय–वस्तुपर समाजक ध्यान खिचैत छथि। परिमाजित गप्तषप जकाँ जगितो बुधिबधिया तीव्र मौलिकता आ व्यंग्य–वेद्यकताक संग एक विलक्षण नाट्यप्रयोग थिक। शैली सहज स्पष्टता आ पारदर्षितासँ बोधगम्य अछि।[5]

गंगेष गुंजन क पहिल उपन्यास पहिल लोक–हिनक उपन्यास 'पहिल लोक' पहिने मिथिला मिहिरमे धारावाही रुपैं 1993 ई0 मे बादमे 1982 मे पुस्तककार प्रकाषित' भेल। एहि उपन्यासक प्रसंग डॉ0 'श्रीष' क मत उल्लेख अछि–''एहिमे एक एहन षिक्षित नवयुवक राजूक कथा कहल गेल अछि। जे समाजमे व्याप्त विसंगति एवं असंतुलनक संवेदनषील स्त्रष्ठा बनल तथा अपन अन्तस्बलमे सुनगैत विक्षोभ ओ कुठाक उत्पीड़नकैं विवष भावैं सहैत ओ सांप्रतिक विवषताक षिकार बनैत थाकल हारल ओ निष्क्रिय बनल रहैत अछि।

उपन्यासक अन्तमे करुणाक राजूक ओहिठाम साहस पूर्वक जयबाक तथा ब्राह्मण द्वारा हर जोतबाक वर्णन एपन्यासक नामकरणकैं सार्थक करैत अछि। 'पहिल लोक' क महत्व एक नवीन रीतिक प्रयोगक दृष्टिएँ अवष्य अछि।''

वस्तुतः गंगेष गुंजनक पात्र बुद्धिजीवी होइंछ जे कमो पढ़ल–लिखल रहैछ, जनो–मजुर रहैछ ओहो बुद्धिजीवी होइछ। एहिमे भाषाक सहज कल्लोलक अनुगुंज सुनबाक अभिलाषा रखनिहार पाढ़ककेँ प्रायः निराष होबऽ पड़लनि। निस्सन्देह 'पहिल लोक' मैथिली उपन्यास भ्ण्डारक उल्लेखनीय निधि थिक।

आइ भोर–एहि एकांकिमे ई नव्यतम षिल्पक प्रयोग कयलनि अछि जे मैथिलीमे अभिनव वस्तु थिक। रोटी आ कविता–एहि समस्याकेँ उजागर करवा लेल लेखक पात्रक नीक मनोविष्लेषता कयलनि अछि। किन्तु जे तत्व हिनक आधुनिक कथाकेँ सर्वसाधारण लग नहि पहुँचऽ दैत अछि। सैह तत्व एहिमे अछि। जाहि कारणे ई बहुत लोकप्रिय नहि भऽ सकल। दोसर एकर मंचित लेल विषिष्ट प्रकारक आधुनिक रंगचंत चाही जकर मिथिलामे एखन घटि अभाव अछिए।

ई एकालाप (मनोलोग) सेहो लिखने छथि। एहिमे सम्पूर्ण नाटकमे एक्केय पात्र रहैछ। एकर रचना बड़ जटिल मानल जाइछ।

बुधिबधिया–बुधिबधिया मैथिलीक पहिल फुट–पाथ नाटक थिक। एहि षिल्पक गुंजन पहिल प्रयोग–कर्त्ता थिकाह। चौबटिया नाटकक विषेषताक प्रसंग लेखक कहैत छथि–''चौबटिया नाटकक मूल विषेषता एकर युगीन कथ्य आ सहजहि सुलभ प्रस्तुति योग्य होयब थिक। बिना कोनो लम्फ–लम्फा, बिना कोनो अतिरिक्त प्रसाधन वेष–भूषा तथा मंच–व्यवस्था मे नाटक तैयारी कऽ कऽ ओकरा बाटपर, बाजार जाइत की कार्यालयसँ घर घुरैत, कि रिक्षावाला–ठेलावाला, मजुर आ चिनियाँबादाम आ सातु बेचनिहार जनसाधारण प्रेक्षक–दर्षककेँ अनायासहि सड़क कातमे बीच चौबट्टीपर वा कोनो नुक्कड़पर उपलब्ध कराओल जाइक।

बुधिबधिया मे देषमे घुमैत समसामयिक घटना चक्रकेँ बिटियाँ कऽ देखल गेल अछि आ आम जनताक प्रतिक्रिया जनाओल गेल अछि। बेकारी, भ्रष्टाचार नेता आ जनताक बीच बढ़त दूरी आम जनताक दिमागसे सुनगैत कान्तिकक चिनगी आदि अनेक बिन्दु एहिमे सिनेमाक रील जकाँ, एक–पर–एक, अनैत चलैत अछि।

मैथिली नाटकमे ई प्रयोग स्वागतयोग्य अछि। अकालक संदर्भमे लिखल प्रस्तुत गीत अकालक भीषणताक उद्घाटनक संगहि मोनक इतिहासकेँ उद्येसि दैत अछि।

बालुपर लिखल हमर मोनक इतिहास
सुन्नसान बाटपर एक ठुढ़ गाछ ठाढ़
असकर चुनमुन्नी सन समय अं उदास
भरि धरती प्राणपर पसरल अकाल आई
मुठी भरि अन्न बऽ हि, भूख एतेकरास
घामे नहायल अपसियान सभ समाज आइ
रक्त–धारमे बहय मनोरथक लहास।[6]

हमः एक य मिथ्या परिचय–ई हिनक दीर्घ कविता थिक। मैथिलीमे एहि प्रकारक कविताक ई पहिल संग्रह थिक। कविताक नवीन शैली थिक जाहिमे कवि कथ्यकेँ व्यपकता प्रदान करैत अछि। महाकाव्य, खण्डकाव्यक युग रहल नहि। किन्तु आधुनिक युगक कथ्य समावेया जखन असंभव भऽ जाइछ तँ ओ एहि प्रकारक कविता लिखैछ। डॉ0 'त्रीष' एकर चर्चा करैत कहैत छथि ''एहिमे गुंजन जी व्यक्ति–व्यक्तिमे आछन्त संत्रास ओ वास्तविकताकेँ अति यर्थाथवादी रीतिएँ चित्रित करैत नवीन काव्यक्षेत्रमे एक नूतन मानदण्ड प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल।

एहि पुस्तकक प्रसंग डॉ0 जयकान्त मिष्क विचार अछि "Gangesh gunjan's free verse poem 'Ham : Ekata mithya parichaya Seeks to be a profound examination of the modern man. The poet partly succeeds in presenting a picture of a common man in the modern age but his fiee verse is not Rhythmic and poetic enongh, it lacks gravity and elegance"

ई मुक्तको कविताक रचना पर्याप्त कयने छथि गीत आ गजल सेहो कम नहि लिखने छथि। हिनक मुक्तक कविता गूढ़ अर्थ लेने रहैछ, ते कतहु–कतहु अस्पष्टताक दोष सेहो ओहिमे चल अबैछ किन्तु गीत हिनक बड़ कोमल, बड़ स्पष्ट ओ बड़ हृदयग्रांही होइछ। हिनक चिन्तन हिनक कवितामे ताकल आ सकैछ हिनक भावना हिनक कोमल गीतमे।

कवितामे गुंजनक उर्वर मस्तिष्क क्रियाषील भऽ जाइछ, गीतमे हिनके प्रेममय हृदय आँगा आनि जाइछ। हिनक गीतमे प्रेम–प्रदर्षन, बिरहमान मनकेँ मोहि लैछ तँ हिनक कवितामे ओकर मूल तत्वकेँ पकड़बा लेल मस्तिष्किकेँ पूरा व्यायाम करऽ पड़ैछ। किन्तु हिनक किछु एहनो कविता अवष्य अछि, जाहिमे शैलीक नव्यता रहितो कथ्य सहज, सरल भऽ कऽ आयल अछि। तहिना 'भोर' क चित्रणमे आधुनिक दृष्टि दृष्टव्य थिक–

चारु कात अन्हार
जलाप्लावित बाघ–अन्हार
हरायल आरिपर
दू टा थर–थर डेग
भेग जोगनी सन आँखि,
शेष संभावित भोरपर
खतरनाक सर्प–फुफकार
चतरल अन्हारीम एकटा
उज्जर दप–दप भूर।।

एहि संगे, हिनक प्रसिद्ध गीतक निम्नलिखित पंक्तिमे भाव–प्रणवता मोहक कल्पनाषीलता आ गयूधार्मिताक गुणकेँ स्पष्ट देखल जा सकैछ–

हमरा नहि सोर करु, हमर बाट काटल अछि।
गामक सिमान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि
सीपीमे बन्द माणि, अहँक स्नेह
भोर किरिन सूर्यमुखी अहँक देह
करिया पहाड़ तर प्राण हमर जाँतल अछि।
एक गोट पारिजात अहँक नाम
एक टा बबुर–बोन हमर गाम
दुनू गोटेक बीच समय निस्सोसँ मातल अछि
गामक सिमान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि।।

गुंजन एतबो लिखिकऽ मैथिली साहित्यमे अमर रहताह किन्तु हिनक प्रतिभा–प्रसुनक मादक–मोहक सुवासँ मैथिली–उद्यान दिनानुदिन अधिकाधिक महमहाइत जायत, ओकर मकरन्दसँ पाटकक मन–प्राण तृप्त होइत चलत, ओकर फलक स्वादपर व्यापक चर्चा चलैत रहत। [7]

वस्तुतः गंगेष गुंजनजी बहुमुखी प्रतिभा सँ सम्पन्न साहित्यकार छथि।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची :–

1. परिचारिका, भीमनाथ झा, भवानी प्रकाषन, पटना, 1935, पृ.– 222
2. तत्रैव, भीमनाथ झा, भवानी प्रकाषन, पटना, 1935, पृ.– 222
3. परिचय प्रसुन, धीरेन्द्र नाथ मिश्र, वैदेही पुस्तक भंडार, पटना, 1983, पृ.– 200–201
4. परिचारिका, भीमनाथ झा, भवानी प्रकाषन, पटना, 1935, पृ.– 223–225
5. आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास, देवकान्त झा, साहित्य अकादमी, दिल्ली, पृ.– 299, 93, 148, 149
6. परिचारिका, भीमनाथ झा, भवानी प्रकाषन, पटना, 1935, पृ.– 223, 224, 226
7. तत्रैव, भीमनाथ झा, भवानी प्रकाषन, पटना, 1935, पृ.– 224, 225, 226